KUMAUN GARHWAL
CHAMBER OF COMMERCE & INDUSTRY
UTTARAKHAND

CHAMBER HOUSE, INDUSTRIAL ESTATE, BAZPUR ROAD, KASHIPUR, DISTT. U. S. NAGAR (UTTARAKHAND)
Phone : (05947) 262478, Fax : (05947) 262078, E-mail : kgcci10@gmail.com, Website : www.kgcci.in

प्रेस विज्ञप्ति

दिनाँक : 29.09.2020

श्री अशोक बन्सल, अध्यक्ष, कुमायूँ गढ़वाल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री द्वारा अवगत कराया गया है कि शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनाँक 18 सितम्बर, 2020 को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) को एक आदेश जारी कर स्कूल पाठ्यपुस्तकों की छपाई के लिए वर्जिन पल्प द्वारा निर्मित पेपर का उपयोग करने हेतु निर्देशित किया गया है।

इस सम्बन्ध में केजीसीसीआई अध्यक्ष श्री अशोक बन्सल द्वारा केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री, डॉ0 रमेश पोखरियाल 'निशंक' व केन्द्रीय वाणिज्य मन्त्री, श्री पीयूष गोयल को पत्र लिखकर अवगत कराया गया है कि शिक्षा मन्त्रालय का यह निर्देश न्यायोचित नहीं है अपितु यह कुछ वर्जिन पल्प आधारित पेपर निर्माताओं के ही पक्ष में है। इससे वर्जिन पल्प आधारित पेपर मिलों द्वारा स्कूल पाठ्यपुस्तकों की छपाई हेतु कागज की आपूर्ति उच्च दरों पर की जाएगी जिसके परिणामस्वरूप स्कूलों की पाठ्यपुस्तकें महंगी होने के कारण आम आदमी पर उसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

श्री अशोक बन्सल ने कहा कि उत्तराखण्ड में कार्यरत रिसाईकिल आधारित कुछ पेपर मिलें विगत कुछ वर्षों से NCERT की पाठ्यपुस्कों की छपाई के लिए समुचित दरों पर कागज की आपूर्ति कर रही हैं। शिक्षा मन्त्रालय के इस आदेश से उत्तराखण्ड में कार्यरत कृषि अवशेष एवं रिसाईकिल पल्प आधारित पेपर मिलों के अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाएगा जिससे वे बन्दी के कगार पर पहुँच जायेंगे।

उन्होंने यह भी अवगत कराया कि भारतीय मानक ब्यूरो ने कागज के निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल के आधार पर पेपर के गुणवत्ता पैरामीटर को परिभाषित नहीं किया है। पेपर निर्माण लाईसेंस IS 1848 : 2018 (भाग 1) के तहत निर्धारित सभी मापदण्डों के अनुपालन में लकड़ी के पल्प, कृषि अवशेष पल्प और पुनर्नवीनीकरण पेपर पल्प का उपयोग पेपर मिलों में पेपर के निर्माण हेतु किया जाता है।

केजीसीसीआई अध्यक्ष द्वारा अवगत कराया गया कि देश में प्रतिवर्ष लगभग 22ण्18 मिलियन टन कागज का उत्पादन होता है जिसमें से लगभग 17.50 मिलियन टन पेपर रिसाईकिल

फाईबर का उपयोग करके बनाया जाता है जो कुल पेपर उत्पादन का लगभग 78 प्रतिशत है। वर्जिन पल्प से निर्मित पेपर के उपयोग के लिए इस तरह के प्रतिबन्धात्मक निर्देश जारी करने से 75 प्रतिशत पेपर निर्माता सरकारी खरीद में भाग लेने की प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जायेंगे।

उन्होंने कहा कि विगत वर्ष छत्तीसगढ़ के पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा वर्जिन पल्प से निर्मित मेपलिथो पेपर रु0 77,168/– प्रति मीट्रिक टन की दर से खरीदा गया जबकि रिसाईकिल पेपर पल्प द्वारा निर्मित उसी गुणवत्ता का पेपर एनसीईआरटी द्वारा रु0 49,500/– प्रति मीट्रिक टन की दर से खरीदा गया। अतः वर्जिन पल्प से निर्मित पेपर की अपेक्षा पाठ्यपुस्तकों की छपाई में रिसाईकिल पेपर एवं कृषि अवशेष पल्प से तैयार पेपर के उपयोग से भारी बचत की जा सकती है।

केजीसीसीआई अध्यक्ष श्री अशोक बन्सल द्वारा केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री, डॉ0 रमेश पोखरियाल 'निशंक' व केन्द्रीय वाणिज्य मन्त्री, श्री पीयूष गोयल को पत्र लिखकर माँग की गयी है कि शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों की छपाई में वर्जिन पल्प से तैयार पेपर का उपयोग किए जाने हेतु दिनाँक 18 सितम्बर, 2020 को जारी दिशा–निर्देशों से जहाँ एक ओर कृषि अवशेष एवं रिसाईकिल पेपर से तैयार पल्प से पेपर निर्माण करने वाली पेपर मिलें प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जायेंगी वहीं दूसरी ओर एक ही गुणवत्ता मानकों पर आधारित एक पेपर को अप्रत्याशित दामों में खरीदा जाएगा तथा दूसरे पेपर की सरकारी खरीद में अनदेखी की जाएगी।

श्री अशोक बन्सल द्वारा अवगत कराया गया है कि शिक्षा मन्त्रालय का यह आदेश वर्जिन पल्प के लिए हरे–भरे पेड़ों के कटान को बढ़ावा देकर प्रत्यक्ष रूप से प्रदूषण को निमन्त्रण देने जैसा है। दूसरी ओर पेपर मिलों में कृषि अवशेषों का उपयोग न होने पर कृषक उसको जलाने पर मजबूर हो जायेंगे इससे जहाँ एक ओर कृषकों की आय में कमी होगी वहीं दूसरी ओर कृषि अवशेषों को जलाये जाने पर वायु प्रदूषण में भी वृद्धि होगी। उन्होंने केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के इस आदेश को तत्काल प्रभाव से वापस लेकर वर्जिन पल्प एवं कृषि अवशेष व रिसाईकिलिंग विधि से तैयार पल्प द्वारा पेपर तैयार करने वाली सभी इकाईयों के साथ केन्द्रीय स्तर पर समानता का व्यवहार करने की माँग की गयी है। यह आदेश न केवल भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों के विरुद्ध है अपितु इससे उत्तराखण्ड में कार्यरत पेपर मिलों के अस्तित्व को भी खतरा पैदा हो जाएगा।

(अशोक बन्सल)
अध्यक्ष